
FULL STOP - 9

➤➤ साक्षी भाव की साधना

- _ ➤➤ अध्यात्म की सबसे बड़ी साधना
 - _ ➤➤ अंतिम अवस्था
 - _ ➤➤ बचपन में हम साक्षी होते हैं
 - संसार के बंधन उसे असाक्षी करते हैं धीरे धीरे
 - हमें बच्चा बनने की साधना करनी है
 - _ ➤➤ कोई आपकी तारीफ़ (स्तुति) करता है तो विशेष रूप से साक्षी रहे
 - कोई भी व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के आपकी तारीफ़ नहीं करता है
 - स्तुति में यदि खुश हुए तो निंदा में दुखी होंगे
 - _ ➤➤ PRACTISE OF DETACHED OBSERVERSHIP (भिन्न भिन्न अभ्यास)
 - नदी को बहते हुए देखना
 - आँखें बंद कर बैठे और देखिये की मन में क्या संकल्प आ रहे हैं... संकल्पों को आने दो और जाने दो... अच्छे और बुरे संकल्पों को आने दो और जाने दो
 - इस संसार को स्टेज समझकर , रंगमंच (THEATRE) का सारा खेल, ACTORS के पार्ट को, दर्शक बनकर देखो ... जैसे रामलीला चल रही है
 - जैसे चारों तरफ AUDIENCE बैठ खेल के मैदान में खेल को देख रही ... जय और पराजय का खेल देख रही है... हम उस खेल में INVOLVED (शामिल) नहीं हैं
 - सीडी को देखो और आत्माओं को चड़ते हुए और उतरते हुए देखिये
 - चक्र को देखिये... आत्माओं को चक्र में चक्र लगाते हुए देखिये
-

➤➤ 3 तरह की अवस्थाएं

- _ ➤➤ ABSOLUTE UNCONSCIOUSNESS (बेहोश)
 - कर्मों को लेकर कोई AWARENESS नहीं
 - बस जिए जा रहे हैं... क्यों कर रहे हैं ? पता नहीं
- _ ➤➤ CONSCIOUSNESS (थोड़ा सा होश)
 - अध्यात्म का थोड़ा सा रोल
 - आत्मा होश और बेहोश के बीच में SWITCH करती रहती है
- _ ➤➤ COMPLETE AWARENESS
 - साक्षी भाव IS THE BRIDGE BETWEEN CONSCIOUSNESS & COMPLETE AWARENESS
 - साधना की अवस्था

→ कोई आश्चर्य नहीं, कोई QUESTION MARK नहीं

→ आत्मा होश और बेहोश के बीच में SWITCH नहीं करती है
